३ यीशु नबी और राजा

- मूसा के समान नबी
- यीशु के राज्य नियम
- यीशु के नियमों का पालन.

मूसा के समान नबी

मूसा एक महान नबी और अगुआ था। उसने अपने लोगों को गुलामी से निकालकर परमेश्वर की व्यवस्था दी। परमेश्वर ने मूसा को दर्शाया कि मसीह भी नबी होकर लोगों को परमेश्वर का वचन देगा। वह लोगों को पाप की गुलामी से छुड़ाएगा। उनके जीवन का राजा होगा और जीवन के लिए नए नियम देगा।

> सो मैं उनके लिए उनके भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करूंगाः और अपना वचन उसके मुंह में डालूंगाः और जिस-जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूंगा वही वह उनको कह सुनाएगा। और जो मनुष्य यह वचन जो वह मेरे नाम से कहेगा ग्रहण न करेगा, तो मैं उसका हिसाब उससे लूंगा। व्यवस्था विवरण १८:१७-१९

कई वर्षों तक लोगों का न्याय परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार हुआ। मूसा ने लिखा कि मसीह के आने पर यह बदल जाएगा। प्रत्येक का न्याय मसीह के नियमों के अनुसार होगा। आज जब हम परमेश्वर के नियम के अनुसार चलना चाहते हैं तो हम यीशु की शिक्षाओं को पढ़ते हैं, जो मसीह के नियम हैं।

उत्तर लिखें

१. यीशु से पहले किस महान नबी ने परमेश्वर की व्यवस्था को पाया?.....

२. मूसा के समान कौन नबी था?

.....

यीशु के राज्य के नियम

धन्य कौन है

यीशु ने पहाड़ पर चढ़कर चेलों को जीवन के मूल सिद्धान्तों की शिक्षा दी इसको हम "पहाड़ी उपदेश" भी कहते हैं। यीशु ने उस आनन्द के विषय में बतलाया जिसे परमेश्वर देता है।

"धन्य हैं वे जो आत्मा में नम्र हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
"धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि परमेश्वर उन्हें शान्ति देगा।
"धन्य हैं वे जो परमेश्वर की इच्छा का पालन करने में तत्पर रहते हैं: क्योंकि परमेश्वर उन्हें पूरी तरह सन्तुष्ट करेगा।
"धन्य हैं वे जो दूसरों पर दया करते हैं, क्योंकि परमेश्वर भी अपनी दया दृष्टि उन **पर रखेगा।**
"धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।
"धन्य हैं वे जो मेल कराने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर की सन्तान कहलाएंगे।
"धन्य हैं वे जो धर्म और सच्चाई के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है।
"धन्य हो तुम जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें और सताएं और झूठ बोल-बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें कहें। आनन्दित और मग्न होना क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है, इसी कारण उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहले हुए थे इसी रीति से सताया था।" मत्ती ५:३-१२

स्वर्ग के राज्य के नागरिक

परमेश्वर ने मूसा के द्वारा लोगों को करने या न करने के मूल नियमों को दिया। ये नियम बदले नहीं। परन्तु यीशु की व्यवस्था मूसा की व्यवस्था से आगे है। मूसा ने सिखाया क्या करना चाहिये। यीशु सिखाता है कि हमें क्या होना चाहिए। हमें नमक के समान जीवन को स्वादिष्ट बनाना है, और ज्योति की तरह परमेश्वर के मार्ग को दिखाना है।

"तुम पृथ्वी के नमक हो।.....
"तुम जगत की ज्योति हो .....इसलिए तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है बड़ाई करें।"
मत्ती ५:१३-१६

उत्तर लिखें

३. किसकी व्यवस्था लोगों के कार्यों पर अधिक प्रभाव डालती है? .....
४. किसकी व्यवस्था बतलाती है कि हम क्या हैं?
.....
५. यीशु ने कहा "तुम पृथ्वी के ..... और जगत की ..... हो।

विचारों और भावनाओं के नियम

मूसा की व्यवस्था वह स्तर है जिससे मनुष्य दूसरे व्यक्ति के कार्यों को जांच सकता है। यीशु हमें ऐसा स्तर देता है जिसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को अपना व्यवहार जाँचना है। व्यवस्था पूरा करते हुए भी एक व्यक्ति हृदय में पापी बना रह सकता है। दुष्ट विचार, भावनाएं और इच्छा ही पाप कराते हैं। यीशु मन की शुद्धि की शिक्षा देता है ताकि हम पवित्र जीवन बिताएं।

"यह न समझो कि मैं व्यवस्था या भविष्यवद्वक्ताओं की पुस्तकों का लोप करने आया हूं। लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं।" मत्ती ५:१७-१८

"तुम सुन चुके हो कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था, हत्या न करना। ..... परन्तु मैं तुमसे कहता हूं: जो कोई अपने भाई को कहे; अरे मूर्ख, वह नरक के आग के दण्ड के योग्य होगा।" मत्ती ५:२१-२२

"तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि व्यभिचार न करना, परन्तु मैं तुमसे कहता हूं जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका है।"
मत्ती ५:२७-२८

उत्तर लिखें

६. क्या परमेश्वर विचारों और इच्छाओं के लिए हमें उत्तरदायी ठहराता है?

..... क) नहीं व्यक्ति के विचार या इच्छा में कोई सहायता नहीं कर सकता।

..... ख) हां, हमारे विचार और इच्छाएं कार्यों को कराते हैं।

प्रेम की व्यवस्था

यीशु के राज्य की व्यवस्था परमेश्वर और एक दूसरे से प्रेम करने की व्यवस्था है।

एक व्यवस्थापक ने पूछा, "व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है?" यीशु ने उत्तर में कहा "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख-बड़ी और मुख्य आज्ञा यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ये ही दो आज्ञाएं हैं जिन पर सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार है।" मत्ती २२:३५-४०

"तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था, कि अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर। परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो। जिससे तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे, क्योंकि वह भलों और बुरों दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है।" मत्ती ५:४३-४५

ऐसा करें

७. इस भाग को फिर से पढ़िए।
८. यीशु की दो बड़ी आज्ञाओं को मुखाग्र करें।

यीशु के नियमों का पालन करें

यीशु के अनुसार आप का जीवन उसकी आज्ञा पालन करने पर निर्भर है। वर्तमान और भविष्य के आनन्दित जीवन का रहस्य इसी में है।

"जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो? जो कोई मेरे पास आता है और मेरी बातें सुनकर उन्हें मानता है ..... वह उस मनुष्य के समान है, जिसने घर बनाते समय भूमि गहरी खोदकर चट्टान पर नींव डाली और जब बाढ़ आई तो धारा उस घर पर लगी, परन्तु उसे हिला नहीं सकी, क्योंकि वह पक्का बना था। परन्तु जो सुनकर नहीं मानता, वह उस मनुष्य के समान है, जिसने मिट्टी पर बिना नींव का घर बनाया। जब उस पर धारा लगी, तो वह तुरन्त गिर पड़ा, और गिरकर सत्यानाश हो गया।"

लूका ६:४६-४९

यीशु के नियम पालन करने में केवल कठिनाई यह है कि कोई इसे स्वयं नहीं कर सकता। हम इस प्रकार बनाए नहीं गए। हमारे हृदयों में पाप है: स्वार्थभाव और विरोध उस स्तर तक पहुंचने में रुकावट है। हम क्या कर सकते हैं?

धार्मिक अगवे निकुदेमुस से एक भेंटवार्ता में यीशु ने इस रहस्य को हमें बतलाया। परमेश्वर हमें ऐसा बदलेगा कि हम यीशु की आज्ञा पालन करना चाहेंगे। और उसकी पवित्र आत्मा ऐसा करने में हमारी सहायता करेगा। यीशु ने इसे नया जन्म कहा। हम परमेश्वर की सन्तान बन जाते हैं और नया स्वभाव पाते हैं।

करोड़ों व्यक्तियों का यही अनुभव रहा है। उन्होंने यीशु के पीछे चलने में एक अद्‌भुत नया जीवन पाया। और वे उसके स्वर्गीय राज्य के भागी होने की आशा लगाए हैं।

प्रार्थना

हे परमेश्वर, मैं नहीं चाहता कि मेरा जीवन नाश हो। दया करके मेरे जीवन से बुरी बातें दूर कर। मुझे नया मनुष्य बना और अपना प्रेम मझे दे। मेरी सहायता कर कि यीशु की शिक्षानुसार मेरा जीवन बने। कृपया मुझे अपनी सन्तान बना ले। आमीन।

उत्तर लिखें

९. सूची में दिये शब्दों पर गोला बनाएं जिन्हें यीशु ने करने को कहा:

परमेश्वर से प्रेम	न्याय	क्षमा
क्रोधित होना	चोरी	अपराध
अच्छे काम	ईर्ष्या	हत्या करना
बैरियों के लिए प्रार्थना		
एक दूसरे से प्रेम		
यीशु की आज्ञा पालन		

१०. कौन सा जीवन न्याय के दिन स्थिर रहकर अन्तकाल तक बना रहेगा?

..... क) वह जो यीशु की शिक्षा का पालन करता है।

..... ख) वह जो स्वयं को प्रसन्न करता है।

..... ग) वह जो दूसरों को प्रसन्न करता है।

११ यदि आपका जन्म हो चुका है तो परमेश्वर का धन्यवाद करें कि उसकी सन्तान हैं यदि अभी तक नया जन्म नहीं हुआ तो क्या आप इसे चाहते हैं? यदि हां, तो ऊपर लिखी प्रार्थना को पढ़ें। और नया जन्म पाने के लिए परमेश्वर से बातें करें।